हिंदी की आरंभिक पत्र–पत्रिकाओं में 'राष्ट्रबोध'

डॉ. विधि शर्मा,
(एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी),
अदिति महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. संगीता कुमारी,
(असिसटेंट प्रोफेसर, हिंदी),
अदिति महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

हिंदी की आरंभिक पत्र–पत्रिकाओं का संबंध 'नवजागरण' से है। जब हम 'नवजागरण' कहते हैं तो उसका संबंध 'हिंदी नवजागरण' से है। 'हिंदी नवजागरण' इसलिए क्योंकि शुरुआती दौर में 'नवजागरण' का अर्थ 'बंगाल नवजागरण' से लिया जाता था। 'हिंदी नवजागरण' की संकल्पना को पहली बार डॉ. रामविलास शर्मा अपनी पुस्तक 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' और 'हिंदी नवजागरण' में प्रस्तुत करते हैं जिसकी शुरुआत वे 1857 की क्रांति के बाद मानते हैं। वे नवजागरण को नया 'शब्दबंध' लेकिन पुरानी धारणा मानते हैं। इस अर्थ में 'हिंदी नवजागरण' बंगाल नवजागरण से भिन्न है। बच्चन सिंह इस भिन्नता की व्याख्या कुछ इस ढंग से करते हैं– ''बंगाल के सबसे प्रभावशाली लेखक बंकिम थे। उनके लेखन में हिंदूवाद का स्वर अधिक मुखर था और उनकी राष्ट्रीयता अपने बंगाल तक सीमित थी। उस काल के अन्य बंगाली लेखकों की दृष्टि भी प्रायः 'सोनार बांगला' के आगे नहीं जाती है। क्षेत्रीयता से आज भी उसकी मुक्ति नहीं हुई है। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध गद्यकार चिपलूणकर वर्णभेद की खाई नहीं पार कर पाये थे। महात्मा फुले को वे हीन दृष्टि से देखते थे। पर भारतेंदु और उनके मंडल के लेखकों में किसी प्रकार की संकीर्णता न थी –न वर्णभेद की और न क्षेत्रीयता की। अन्य लेखकों की भाँति भारतेंदु मंडल भी देश का स्वतंत्र–सांस्कृतिक व्यक्तित्व खोज रहा था। पर उनका देश बड़ा था।'' जब हम 'राष्ट्र' या 'राष्ट्रबोध' की बात करते हैं तो 'हिंदी नवजागरण' का राष्ट्रबोध बंगाल–महाराष्ट्र के नवजागरण की तुलना में ज्यादा व्यापक एवं प्रभावशाली था। इस राष्ट्रबोध का आधार–मनुष्यता हैए मानवता है। हिंदी नवजागरण में इस राष्ट्रबोध के निर्माण में जितना योगदान साहित्य की विधाओं का है, उतना ही योगदान हिंदी की आरंभिक पत्र–पत्रिकाओं का रहा है। उनका उद्देश्य–व्यवसाय नहीय जनजागरण था। इस संबंध में 'लिटरेचर इन ए चेंजिंग एज' के लेख 'डाइक' लिखते हैं– ''उन्नीसवीं शताब्दी में साहित्य के निदेशक न केवल बुद्धि एवं ज्ञान के क्षेत्रों में अग्रणी थे, बल्कि वे लोग थे, जिन्होंने पुस्तकें बेचने और छापने में अपनी पूंजी लगा दी थी।'' 'डाइक' यहाँ भारतेंदुयुगीन पत्र–पत्रिकाओं की बात कर रहे हैं। अपनी पूंजी के सहारे पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन का एक ही उद्देश्य था– 'स्वत्व निज भारत गहै'। 'स्वत्व' अर्थात् पहचान या अस्मिताबोध। यह 'स्वत्व' तभी प्राप्त हो सकता था, जब भारत 'राजनीतिक पराधीनता' से मुक्त हो। तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में 'राजनीतिक स्वाधीनता' का स्वर मुखर था। राजनीतिक स्वाधीनता के साथ–साथ सामाजिक स्वाधीनता भी आवश्यक है। सामाजिक स्वाधीनता अर्थात सामाजिक बंधनों, रूढ़िवादों, अंधविश्वासों, ऊँच–नीच, वर्ण–भेद, जाति–भेद, आर्थिक भेदभाव से मुक्ति। इस दौर की पत्रकारिता देशोद्धार, समाज–सुधार तथा हिंदी भाषा एवं साहित्य को अलग– अलग नहीं मानती थी। सुधार, क्रांति एवं परिवर्तन इनके स्वर में था। यह बोध ही 'राष्ट्रबोध' है। वे देश–समाज के साथ–साथ भाषा और साहित्य का भी विकास चाहते थे। बिना अपनी दुर्बलताओं से लड़े शत्रु को पराजित नहीं किया जा सकता – यह मूलमंत्र हिंदी की

आरंभिक पत्र–पत्रिकाओं का प्राण था। इस 'राष्ट्रबोध' के आधार पर हम हिंदी की आरंभिक पत्र–पत्रिकाओं का मूल्यांकन करेंगें। हिंदी की आरंभिक पत्र–पत्रिकाओं में हम 'उदंत मार्तण्ड', 'बंगदूत', 'बनारस अखबार', 'समाचार सुधावर्षण', 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चंद्र मैगजीन' (हरिश्चंद्र चंद्रिका), 'हिंदी प्रदीप', 'ब्राह्मण', 'भारत मित्र', 'सारसुधानिधि', 'उचित वक्ता' आदि पत्र–पत्रिकाओं का उल्लेख करेंगें। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसी पत्र–पत्रिकाओं पर भी प्रकाश डालेंगे जो स्वाधीनता आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाती रही हैं। परंतु उसके पूर्व हम उस पृष्ठभूमि पर बात करेंगे जिससे हिंदी पत्र–पत्रिकाओं के लिए ज़मीन तैयार होती है।

हिंदी के प्रथम समाचार पत्र उदंत मार्तण्ड से पूर्व कुछ ऐसी पत्र–पत्रिकाएँ भी थीं जिनका असर हिंदी की पत्र–पत्रिकाओं पर खूब पड़ाय जैसे– बंगाल गजट, दिग्दर्शन, दरबार रोजनामचा।

जेम्स आगस्त हिकी ने 28 जनवरी, 1787 (कहीं–कहीं 1779 है) को 'हिकीज बंगाल गजट' या 'केलकट्टा जनरल एडवरटाइजर' शीर्षक से एक साप्ताहिक पत्र निकाला। यह पत्र इस मामले में विशेष है कि यह भारत का पहला अखबार था। हालांकि यह अंग्रेजी भाषा का अखबार था लेकिन इससे भारत में पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन को बल मिला। यह दो पृष्ठों का समाचार पत्र था और यह तीन कॉलमों में दोनों ओर मुद्रित होता था। पत्रकारिता की दृष्टि से यह बहुत संपन्न समाचार पत्र नहीं था लेकिन अंग्रेजी हुकूमत का पर्दाफाश करने में यह पत्र अग्रणी रहा। यहाँ तक कि इस पत्र ने गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स तक की अच्छी खबर ली। परिणामस्वरूप यह समाचार पत्र बंद करा दिया गया और हिकी को जेल में डाल दिया गया। उस समय तक अंग्रेजी हुकूमत के पास अखबारों को लेकर कोई स्पष्ट नीति नहीं थी। इस पत्र के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में सरकार की आलोचना और भ्रष्टाचार का उन्मूलन के साथ–साथ सरकार द्वारा उनका दमन प्रारंभ हुआ। परिणाम यह हुआ कि 1857 के बाद अधिकांश अंग्रेजी पत्र सरकार समर्थक तथा भारतीय भाषा के पत्रों में सरकार के जनविरोधी रवैये का विरोध दिखने लगता है। देश–समाज के प्रति जागरूक करने में ये अहम भूमिका निभाने लगे। 'बंगाल गजट' की भाँति उस दौर में 'कलकत्ता कैरियर', 'एशियाटिक मिरर', 'ओरिएंटट स्टार', 'बांबे गजट', 'हेराल्ड' एवं 'मद्रास गजट' प्रमुख समाचार पत्र निकले जिन्होंने भारतीय भाषाओं की पत्र–पत्रिकाओं को प्रेरित किया।

'दिग्दर्शन' भारतीय भाषा की प्रथम मासिक पत्रिका थी। यह अप्रैल, 1818 को हुगली, बंगाल से प्रकाशित हुई। इस पत्रिका के संपादक पादरी जॉन क्लार्क मार्शमैन थे। यह अंग्रेजी तथा बांग्ला दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती थी। इसके अप्रैलए 1818 से जनवरी–अप्रैल, 1820 तक कुल सोलह अंक प्रकाशित हुए। हिंदी में भी इस पत्र को प्रकाशित करने की योजना थी। परंतु इसके हिंदी के अंक उपलब्ध नहीं हैं। यह पत्रिका मूलतः शिक्षाप्रद पत्रिका थी जो भारतीय विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा प्रदान करती थी। यह पत्रिका मुख्यतः बैपटिस्ट मिशनरियों द्वारा निकाली गई थी।

'दरबार रोजनामचा' या कोर्ट जर्नल की सूचना कर्नल जेम्स टॉड से मिलती है। उनके अनुसार – 1818–1820 ई. के बीच बूंदी (राजस्थान) से एक 'दरबार रोजनामचा' प्रकाशित होता था। भाषा के प्रयोग और उसकी अनुपलब्धता की वजह से यह समाचार–पत्र अप्रमाणिक माना जाता है कर्नल टॉड ने इस अखबार का 18 अक्तूबरए 1820 का एक अंश अपनी पुस्तक 'एनल्स एण्ड क्विटीज ऑफ राजस्थान : भाग–2' में प्रकाशित किया जिससे इस पत्र की प्रमाणिकता सिद्ध होती है।

'उदंत मार्तण्ड' हिंदी का पहला प्रमाणिक समाचार पत्र माना जाता है। उदंत मार्तण्ड का अर्थ है– 'समाचार सूर्य'। इसका प्रकाशन 30 मई, 1826 को कलकत्ता के कोल्हू टोला के अमड़ताला के गृह नं. 37 से हुआ। यह प्रत्येक मंगलवार को प्रकाशित होता था। इसका वार्षिक मूल्य दो रुपये था। उदंत मार्तण्ड के संपादक कानपुर निवासी पंडित युगल किशोर शुक्ल थे। पंडित युगल किशोर शुक्ल आधुनिकता के पक्षधर थे और बंगाल में राजा राममोहन राय के सामाजिक कार्यों से प्रभावित थे। पं० युगल किशोर बंगाल में एक भी हिंदी समाचार पत्र के न होने से दुखी थे। उन्होंने क्षेत्रीय संकीर्णता के बीच भारतीय विचारधारा से प्रभावित समाचार पत्र निकालने का मन बनाया। उनकी इच्छा थी–''नाना देश के सत्य समाचार हिंदुस्तानी लोग देखकर आप पढ़ें और समझ लें और पराई अपेक्षा और अपनी भाषा की उपज न छोड़ें। इसीलिए सबके कल्याण के विषय में गवर्नर जनरल की आज्ञा से ऐसे साहस में चित्त लगाय के एक प्रकार से नया ठाठ ठाठा। कहना न होगा कि हिंदी का पहला समाचार भारतीयों के हित में निकाला गया। यह 'हिंदी नवजागरण' का शुरुआती चरण था। तत्कालीन ईस्ट इंडिया कंपनी के दोहरे रवैये तथा आर्थिक संकट के बीच इस पत्रिका को 4 दिसंबर, 1827 को बंद करना पड़ा। उदंत मार्तण्ड को तत्कालीन सरकार से डाक व्यय से प्राप्त छूट या सुविधा नहीं मिली। 4 दिसंबर के अंतिम अंक में संपादक युगल किशोर ने दुःखी मन से लिखा–

'आज दिवस लौं उग चुक्यौ मार्तण्ड उदन्त

अस्तांचल को जात है दिनकर दिन अब अंत'

उदंत मार्तण्ड हिंदी समाज के हितों के लिए निरंतर संघर्षरत रहा और अंततः एक प्रकाशय एक उम्मीद देकर बंद हो गया। उदंत मार्तण्ड की भाषा जन साधारण के बेहद करीब थी जो किसी भी आदर्श समाचार पत्र का गुण होता है। उदंत मार्तण्ड ने अपनी सफलता एवं लोकप्रियता से हिंदी क्षेत्र में समाचार पत्रों के प्रकाशन को प्रेरणा दी।

'बंगदूत' 10 मई, 1829 को प्रकाशित हुआ जिसके संचालक राजा राममोहन राय थे। 'बंगदूत' 'हिंदू हेरल्ड' का हिंदी रूप था। यह अंग्रेजी, बांग्ला, फारसी और हिंदी भाषा में निकलता था। 'बंगदूत' के पहले संपादक नीलरतन हालदार थे। यह रविवार को प्रकाशित होता था। यह अखबार बांग्ला भाषी क्षेत्र में हिंदी भाषी लोगों के लिए था ताकि वे बंगाल में चल रही परिवर्तन की बयार से परिचित हो सकें।

'बनारस अखबार' हिंदी भाषा भाषी प्रदेश से निकलने वाला हिंदी का प्रथम हिंदी समाचार है। यह 1845 में बनारस से प्रकाशित हुआ। राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' इस पत्रिका के संचालक थे। पंडित गोविंद रघुनाथ थट्टे इस समाचार पत्र के संपादक थे। देवनागरी लिपि के इस समाचार पत्र में 'हिंदुस्तानी' भाषा को महत्व दिया जाता था। हिंदी के साथ उर्दू का प्रयोग खूब होता। उर्दू के साथ फारसी शब्दों का प्रयोग भी बहुतायत होता था। इस समाचार पत्र का उद्देश्य 'हिन्दुस्तानी भाषा' अर्थात् हिंदी–उर्दू का प्रचार–प्रसार था। संयोग है कि आगे चलकर खड़ी बोली गद्य में हिंदुस्तानी भाषा का प्रयोग अधिक हुआ। यहां तक कि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने नाटकों में इस हिंदुस्तानी भाषा का खूब प्रयोग किया।

हिंदी का पहला दैनिक समाचार पत्र 'समाचार सुधावर्षण' था। यह दैनिक पत्र सन् 1854 में बड़ा बाज़ार, कलकत्ता से निकला था। यह द्विभाषी पत्र था जिसके संपादक श्यामसुंदर सेन थे। इस पत्र के पहले दो पृष्ठ हिंदी के और अंतिम दो पृष्ठ बांग्ला भाषा में छपते थे। इस समाचार पत्र में समाज सुधार को लेकर उत्साह था। समाज के साथ–साथ सरकार को भी दायित्वों का बोध कराने में यह समाचार पत्र पीछे न रहता। इस कारण इसे अंग्रेजी हुकूमत का

दमन झेलना पड़ा। यह समाचार पत्र 1868 तक निरंतर प्रकाशित होता रहा। कुछ मामलों में यह समाचार पत्र प्राचीन रीति–रिवाज एवं आचार–विचार का पक्षधर था।

नवजागरणकालीन के सभी पत्र 'हिंदी नवजागरण' की आधारशिला का काम करते थे। 'हिंदी नवजागरण' का वास्तविक समय 'भारतेंदु युग' से माना जा सकता है। इस युग की पत्र–पत्रिकाओं में देश एवं समाज की चिंता सर्वोपरि रहती थी। इस श्रेणी की पहली पत्रिका 'कविवचन सुधा' को रख सकते हैं।

'कविवचन सुधा' पत्रिका 15 अगस्त, 1868 को प्रकाशित हुई। संपादक थे–'आधुनिक हिंदी के जनक' भारतेंदु हरिश्चंद्र। बालमुकुंद गुप्त ने 'कविवचन सुधा' के संदर्भ में जो कहा था, वह उल्लेखनीय है। उन्होंने कहा– ''यद्यपि हिंदी भाषा के प्रेमी उस समय बहुत कम थे तो भी हरिश्चंद्र के ललित लेखों ने लोगों के जी में ऐसी जगह कर ली थी कि 'कविवचन सुधा' के हर नंबर के लिए लोगों को टकटकी लगाये रहना पड़ता था। 'कविवचन सुधा' का उद्देश्य स्पष्ट था। डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं– ''इसी पत्रिका (कविवचन सुधा) में भारतेंदु ने स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार के लिए अपना प्रतिज्ञापत्र छापा था, इसी पत्रिका में उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा, अंग्रेजी नीति का भंडाभोड़ किया था, इसी में उन्होंने हिंदी के प्रचार और विकास के लिए आंदोलन किया था।'' 1870 में लार्ड मेयो के 'लेवी दरबार' को आधार बनाकर भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'लेवी प्राणलेवी' नामक व्यंग्य लेख लिखा। इस लेख से अंग्रेजी हुकूमत के प्रति भारतेंदु का नज़रिया स्पष्ट हो गया। कविवचन सुधा पत्रिका में भारतेंदु अंग्रेजी हुकूमत का कोपभाजन बनने के बहुत सारे प्रसंगों का उद्घाटन करते हैं। 'गवर्नमेंट एड' (सरकारी विज्ञापन) बंद करने की अंग्रेजी हुकूमत की धमकी का ज़िक्र भी वे इस पत्र में करते हैं (8 जून 1874 के अंक में 'अप्रसन्नता' नामक लेख)। कविवचन सुधा शुद्ध साहित्यिक पत्रिका न थी। वह मूलतः साहित्य, समाचार और राजनीति की पत्रिका थी (ऐसा 1872 के अंकों पर छपा रहता था : श। इप. उवदजीसल रवनतदंस वि स्पजमतंजनतमए छमूंदक च्वसपजपबेश्द्धण शुरुआती दौर में कविवचन सुधा मासिक पत्रिका थी, जो 1 सितम्बर, 1873 से साप्ताहिक हो गयी। भाषा–साहित्य के साथ राजनीतिक लेखों से भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जनजागरण का काम किया। कविवचन सुधा में वे भारतीय उद्योग धंधों की चिंता करते दिखते हैं। भारतीय समाज में फैले अंधविश्वास की चिंता भी उनकी इस पत्रिका में जगह–जगह दिखती है। वे इस पत्रिका के माध्यम से अंग्रेजी–सत्ता के शोषण के तरीकों का कच्चा चिट्ठा खोलते हैं।

भारतेंदु हरिश्चंद्र की अगली पत्रिका 'हरिश्चंद्र मैगजीन' का मूल स्वर भी देश की उन्नति और ब्रिटिश हुकूमत की पोल खोलना था। नौ अंकों बाद 'हरिश्चंद्र मैगजीन' 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' के नाम से प्रसिद्ध हुई। 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' के योगदान पर डॉ. रामविलास शर्मा का कथन उल्लेखनीय है– '' 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' ने साहित्य और पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय सम्मान की भावना जगाने, साहित्यिक रूचि फैलाने, हिंदी भाषा को देश के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में उचित स्थान दिलाने के लिए संघर्ष में प्रशंसनीय काम किया।''

भारतेंदु युग की एक और पत्रिका ने 'हिंदी नवजागरण' में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पत्रिका का नाम है– हिंदी प्रदीप। इसके संपादक पंडित बालकृष्ण भट्ट थे। यह मासिक पत्रिका प्रयाग की 'हिंदी प्रवर्धिनी सभा' के सहयोग से सितंबर, 1877 को प्रकाशित हुई। यह पत्रिका ऐतिहासिक रूप में तैंतीस वर्ष तक प्रकाशित होती रही। भारतेंदु युग की यह सर्वाधिक निर्भीक पत्रिका थी। यह पत्रिका हिंदी की मासिक पत्रिकाओं की प्रेरणास्रोत बनी। 'हिंदी प्रदीप' का स्वर निर्भीक था। 1909 के चौथे अंक में माधव

शुक्ल की एक कविता 'बम क्या है' छपी तो अंग्रेज सरकार ने पत्रिका पर तीन हजार रुपये का जुर्माना कर दिया। जुर्माना न देने पाने के कारण अंततः पत्रिका बंद करनी पड़ी। 14 मार्च, 1878 के 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' का इस पत्रिका ने जोरदार विरोध किया। यह पत्रिका मूलतः साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक पत्रिका थी। इस पत्रिका के माध्यम से बालकृष्ण भट्ट भाषा सम्बन्धी सवालों को भी उठाते हैं।

'ब्राह्मण' पत्र प्रतापनारायण मिश्र के संरक्षण में निकला। यह पत्र 1883 में प्रकाशित हुआ। इस पत्र का मुख्य उद्देश्य जनसाधारण में हिंदी का प्रचार–प्रसार करना था। इसकी भाषा जनानुकूल, अत्यंत सरल एवं ग्राही थी। जनता को ध्यान में रखकर इसकी भाषा मनोरंजक रखी गई। इस पत्र में साहित्य की विविध विधाएँ, जैसे नाटक, निबंध, कविता, प्रहसन आदि प्रकाशित होते। इस पत्र में समाचारों के लिए भी जगह थी। प्रतापनारायण मिश्र के लेख 'लोकहित' का संदेश देते। प्रतापनारायण मिश्र की निर्भीकता उनके लेखों में झलकती थी। वे अंग्रेजी शासन पद्धति की जमकर आलोचना करते। अंग्रेजी शासन की तुलना वे 'मृत्यु देवता' से करते थे। जनकल्याण उनके पत्र का मूल स्वर था।

'भारत मित्र' पाक्षिक पत्र के रूप में 17 मई, 1878 को प्रकाशित हुआ। अपनी शैली के कारण लोकप्रिय हुआ यह समाचार पत्र दसवें अंक से साप्ताहिक हो गया। सन् 1897 आते आते यह छोटे आकार का दैनिक समाचार पत्र बन गया। भारत मित्र संभवतः पहला समाचार पत्र था जो संवाददाता रखकर ख़बर जल्द से जल्द लोगों तक पहुंचाता था। स्वामी दयानंद सरस्वती की मृत्यु की ख़बर अगले ही दिन इस समाचार पत्र ने छाप दी थी। इस समाचार पत्र ने 1884 में 'हिंदी प्रसार आंदोलन' चलाया। 'भारत मित्र' का स्वर उस दौर की राष्ट्रवादी पत्रिकाओं की भाँति मुखर था । यह देशहित पर चर्चा करने वाला समाचार पत्र था। इसे राष्ट्रीय राजनीति का मुखपत्र माना जा सकता है। जनजागृति को बढ़ाने में इस समाचार पत्र का अमूल्य योगदान है। बालमुकुंद गुप्त के कार्यकाल में यह पत्र लोकप्रियता की ऊँचाई छू रहा था।

'सारसुधानिधि' कलकत्ता से निकलने वाला साप्ताहिक पत्र था। सन् 1887 को प्रकाशित होने वाले इस पत्र के संपादक पंडित दुर्गाप्रसाद मिश्र थे। यह भी उस दौर की अन्य पत्र–पत्रिकाओं की भांति अत्यंत तेजस्वी समाचार पत्र था। देश की प्रगति एवं राजनीतिक संस्कार से युक्त जनजागृति इस समाचार पत्र की प्राथमिकता थी। इसकी विचारधारा भारतेंदु हरिश्चंद्र की विचारधारा से मेल खाती थी। यह प्रगतिशील समाचार पत्र था, जिसका स्वर समाज सुधार था। यह साहित्यिक पत्र नहीं था परंतु भाषा संस्कृतनिष्ठ हिंदी थी । इस संबंध में एक टिप्पणी इस समाचार पत्र में छपी थी जो पढ़ने योग्य है – ''शिक्षा विभाग में हिंदी भाषा का परिशुद्ध रूप से प्रचार होना बहुत आवश्यक है.... जब तक निष्कपट विशुद्ध भाषा की उन्नति नहीं होयगी, तब तक निष्कपट सभ्यता और देश की उन्नति नहीं होयगी।'' भाषा की उन्नति देश की उन्नति है, यह बात पत्र के संपादक भलीभाँति जानते थे। यही बात भारतेंदु बाबू पहले भी कह चुके थे–'निज भाषा उन्नति अहै। सब उन्नति को मूल।'

'उचित वक्ता' भी पंडित दुर्गाप्रसाद मिश्र के संचालन में निकलने वाला पत्र था। सारसुधानिधि की भांति यह पत्र भी देश की प्रगति की चिंता करना अपना सिद्ध मानता था। साहित्य एवं राजनीति दोनों इस पत्र के मुख्य विषय थे। 1880 में प्रकाशित इस साप्ताहिक पत्र का आदर्श वाक्य था–''हितं मनोहारिच दुर्लभं वचः।'' यह पत्र सरस्वती प्रेस से छपता था। उचित वक्ता की संपादकीय टिप्पणियाँ जातीय चेतना से भरी होती थी। भारत दुर्दशा पर यह पत्र निरंतर प्रश्न

उठाता रहा। उन्नीसवीं सदी की राष्ट्रीय चेतना का इस पत्र पर स्पष्ट प्रभाव था।

निष्कर्ष तौरे पर हम कह सकते हैं कि हिंदी की आरंभिक पत्र–पत्रिकाओं में राष्ट्र एवं 'राष्ट्रचिंता' की भावना अंतर्निहित है। राष्ट्रबोध के निर्माण में इन पत्र–पत्रिकाओं का अमूल्य योगदान है। इन पत्र–पत्रिकाओं ने भविष्य निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया और आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता आंदोलन का मूल्यांकन आप इन पत्र–पत्रिकाओं के बिना नहीं कर सकते। यही उनकी उपलब्धि है।

संदर्भ–सूची

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ, डॉ. रामविलास शर्मा–तीसरे संस्करण की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, संस्करण, 2014
2. वही, तीसरे संस्करण की भूमिका।
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास (नवजागरण युग), बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण, 2002, पृष्ठ–285
4. पत्रकारिता के सिद्धांत, कमलापति त्रिपाठी, कलामंदिर, पृ०–1–2
5. भारतेंदु हरिश्चंद्र के शब्द
6. पत्रकारिता के सिद्धांत, कमलापति त्रिपाठी, कलामंदिर, पृ०–156
7. वही, पृ०–156
8. वही, पृ०–157
9. हिंदी पत्रकारिता – डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1968, पृ०–53
10. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ, डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2014, पृष्ठ–95
11. वही पृ० – 95
12. वही, पृ० – 97
13. वही, पृष्ठ– 101
14. हिंदी प्रदीप, मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से
15. हिंदी पत्रकारिता के सिद्धांत, कमलापति त्रिपाठी, कला मंदिर पृ०–170